भूमिका

वर्तमान सदी वादों, विवादों एवं अस्मिता मूलक विमर्शों की है। जिसमें दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, स्त्री विमर्श, जेंडर विमर्श, विकलांग विमर्श आदि अनेक विमर्श हमारे समक्ष उपस्थित हैं। इन्हीं विमर्शों में स्त्री विमर्श भी अत्यंत महत्वपूर्ण रूप से उभरकर सामने आया है। स्त्री संघर्ष को समझने का आशय आधी आबादी की मूलभूत संरचनाओं व संघर्षों को समझना है। स्त्री संघर्ष पर चर्चा करना जितना रोचक और आसान समझा जाता है वह उतना आसान नहीं बल्कि उस संघर्ष को समझना बेहद चुनौतीपूर्ण है। अब तक स्त्री समाज में हाशिए की जिंदगी जीने को अभिशप्त रही है। अगर इस बात को इस तरह से समझने का प्रयत्न करें कि आधुनिकता की अवधारणा व सामाजिक आंदोलनों ने स्त्री को भी उसके अधिकारों के प्रति अत्यंत सजग किया है तो अत्युक्ति नहीं होगी। स्त्री अधिकारों के लिए जो संघर्ष यूरोपीय देशों व फ्रांसीसी क्रांति के द्वारा किया गया, उसका व्यापक प्रभाव एशियाई देशों पर भी पड़ा है। अगर हम देखने का प्रयत्न करें तो महसूस करेंगे कि भारत में इसका असर लंबे अंतराल के बाद पड़ा। यही कारण है कि भारत में प्रमुख स्त्रीवादी आंदोलन आजादी के बाद ही हुए। भारत के स्त्रीवादी चिंतकों में सावित्री बाई फुले का नाम अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने स्त्री शिक्षा के लिए चेतना और साहस की ज्योति जलाई। अन्य स्त्रीवादी चिंतकों में पंडिता रमाबाई, शारदा देवी, महादेवी वर्मा, ताराबाई शिंदे, सरोजनी नायडू आदि का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है।

मध्यकालीन स्त्री विमर्शकारों में मीराबाई, आंडाल, सहजोबाई, अक्कमहादेवी आदि का नाम आता है लेकिन चिंतन और विमर्श का स्वरूप आजादी के बाद महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, ताराबाई शिंदे आदि की कृतियों में दिखाई देता है। जहां से स्त्री विमर्शकारों को प्रेरणा एवं प्रोत्साहन मिला है और वे स्त्री के अधिकारों एवं संघर्ष व उनके जीवन की कठिनाइयों से पूर्णतः परिचित हुए हैं। नई पीढ़ी के स्त्री विमर्शकार भी इन्हीं से प्रेरणा लेते हुए आगे बढ़ रहे हैं।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का विषय **'सुधा अरोड़ा की कहानियों में स्त्री संघर्ष (अन्नपूर्णा मंडल की आखिरी चिट्ठी के विशेष संदर्भ में)'**है। इस विषय के चुनाव कारण यह रहा है कि आज आधुनिकता की अवधारणा से जहां स्त्रियों के कार्य क्षेत्र में वृद्धि हुई है, वहीं उनके शोषण में भी बढ़ोत्तरी हुई है। आज स्त्री शिक्षा प्राप्त कर उन्नति कर रही है और वह राजनीति, प्रशासन एवं संसद तक पहुंच गई है लेकिन हर जगह उसका शोषण हो रहा है क्योंकि पुरुषवादी मानसिकता अभी तक पूर्णतः नहीं बदल पाई है। स्त्री के चरित्र को

लेकर आज भी समाज में कई तरह के प्रश्न उठाए जाते हैं। आज महानगरों में मध्यवर्गीय एवं निम्न मध्यवर्गीय स्त्रियां कैसे दोहरे शोषण का शिकार हो रही हैं। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के माध्यम से इस यथार्थ को परखने की कोशिश की गई है। आज पितृसत्तात्मक समाज में उनका दोहरा शोषण हो रहा है। वे बाहर जाकर नौकरी करती हैं और उसके साथ ही साथ घर के कार्य भी करती हैं जबकि पुरुष उनकी अपेक्षा काफी स्वतंत्र होता है। पुरुष के ऊपर घरेलू कार्यों एवं बच्चों की कोई जिम्मेदारी नहीं रहती है। इन दोहरे कार्यों को संभालने के बाद भी पुरुष हमेशा स्त्री को बच्चों को समय पर न तैयार कर पाने या बच्चों के फ़ेल हो जाने पर एवं भोजन आदि को लेकर कुछ न कुछ बोलता ही रहता है। ऐसे में स्त्रियों का शारीरिक एवं मानसिक दोनों तरह का शोषण होता है। वे महानगरों की व्यस्त जिंदगी में अपने कार्य भार को कम करने के लिए नौकरी भी नहीं छोड़ सकती क्योंकि आर्थिक आत्मनिर्भरता स्त्री को बहुत सशक्त बनाती है लेकिन यह आत्मनिर्भरता भी समानता नहीं दिला पा रही है। ऐसी स्थिति में महानगरों में स्त्रियां कैसे तनावपूर्ण जीवन जीने के लिए विवश हैं, सुधा अरोड़ा की कहानियां इसका यथार्थ प्रस्तुत करती हैं। अगर बारीकी से देखने का प्रयास किया जाय तो हम महसूस करते हैं कि इस तरह के शोषण का शिकार ज्यादातर मध्यवर्गीय एवं निम्न मध्यवर्गीय परिवारों की स्त्रियां ही होती हैं। ऐसे में स्त्रियों की इन समस्याओं को समझना बहुत जरूरी हो जाता है क्योंकि यह किसी व्यक्ति विशेष की समस्या न होकर आधी आबादी की समस्या है। इस विषय को लेकर अभी तक किसी भी विश्वविद्यालय या अन्य शैक्षणिक संस्थानों में कोई मुकम्मल शोध कार्य नहीं हुआ है।

स्त्री विमर्शकारों ने सहानुभूति की जगह स्वानुभूति को अभिव्यक्त किया है। समकालीन स्त्री विमर्शकारों में मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती एवं उषा प्रियंवदा के बाद की पीढ़ी में ममता कालिया और सुधा अरोड़ा का नाम आता है। इनके लेखन की शुरुआत सातवें दशक से प्रारंभ होती है जो अनवरत जारी है। सुधा अरोड़ा ने अपनी कहानियों में मुख्यतः शहरी मध्यवर्गीय एवं निम्न मध्यवर्गीय स्त्रियों की त्रासदी को दिखाया है। महानगरों में नौकरीपेशा, कामकाजी एवं मजदूर स्त्रियां अपने घरों में किन- किन समस्याओं व यातनाओं से जूझती हैं। इसका यथार्थ **'अन्नपूर्णा मंडल की आखिरी चिट्ठी'** कहानी संग्रह की कहानियों में दिखाई देता है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध **'सुधा अरोड़ा की कहानियों में स्त्री संघर्ष'** (अन्नपूर्णा मंडल की आखिरी चिट्ठी के विशेष संदर्भ में)' में कुल तेरह कहानियां सम्मिलित हैं। जिसमें आजादी के बाद भारत के प्रमुख महानगरों कोलकाता, मुंबई और दिल्ली में भूमंडलीकरण, औद्योगीकरण तथा पूंजीवाद के कारण बढ़ती

समस्याओं, बच्चों एवं वृद्धों का एकाकीपन, कामकाजी स्त्रियों की त्रासदी, मानवीय मूल्यों का विघटन व क्षरण और श्रमिकों के शोषण को दिखाया गया है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को भूमिका और उपसंहार के अतिरिक्त चार अध्यायों में विभाजित किया गया है। अंत में संदर्भ ग्रंथ- सूची दी गयी है और आलोच्य लेखिका सुधा अरोड़ा का लिया गया साक्षात्कार परिशिष्ट में दिया गया है। जिसका प्रथम अध्याय **'सुधा अरोड़ा: समय से साक्षात्कार'** है। इसके अंतर्गत हिंदी कहानी की विकास यात्रा को संक्षेप में दिखाते हुए महिला कहानीकारों में सुधा अरोड़ा का स्थान एवं उनकी कहानियां अपने समय के यथार्थ को किस तरह दिखाती हैं, इसे देखने का प्रयास किया गया है। इसके प्रथम उप-अध्याय **'सुधा अरोड़ा और उनका समय'** में इनके जन्म, शिक्षा- दीक्षा को दिखाते हुए इनकी कहानियों को इनके समय से जोड़कर देखने का प्रयास किया गया है। द्वितीय उप-अध्याय **'सुधा अरोड़ा की कथा यात्रा'** में सुधा अरोड़ा के लेखन की शुरुआत से लेकर अब तक लिखी सभी रचनाओं को दिखाते हुए उन्हें मिले पुरस्कार एवं सम्मान को भी दिखाया गया है। तृतीय उप-अध्याय **'सुधा अरोड़ा की रचना दृष्टि'** है। इसके अंतर्गत उनकी रचना दृष्टि को समझने का प्रयास किया गया है तथा यह देखने का प्रयास किया गया है कि इनकी रचना दृष्टि अन्य कहानीकारों से किस तरह भिन्न है तथा वे अपनी कहानियों के माध्यम से किन- किन समस्याओं को प्रमुखता से उठाई हैं। इन सभी बिंदुओं को समझने की कोशिश की गई है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का द्वितीय अध्याय **'स्त्री संघर्ष एवं मुद्दे'** है। इसके अंतर्गत स्त्री की प्राचीन काल की स्थिति और वर्तमान स्थिति को देखते हुए उनके शोषण को दिखाया गया है तथा आज भी स्त्री संघर्ष का मुख्य उद्देश्य असमानता को दूर करना तथा उन्हें मनुष्य के रूप में स्वीकारने का है। इसे दिखाया गया है। इसका प्रथम उप- अध्याय **'स्त्री मुक्ति संघर्ष, स्वरूप एवं इतिहास'** है। इसके अंतर्गत स्त्री की प्राचीन स्थिति को देखते हुए पुनर्जागरण काल में हुए समाज सुधार आंदोलनों में राजाराम मोहनराय से लेकर डॉ. अंबेडकर एवं माँ अमृतानंदमयी का स्त्री समस्याओं को दूर करने में जो योगदान है, उसे दिखाने की कोशिश की गई है। इसका द्वितीय उप- अध्याय **'स्त्री मुक्ति संघर्ष: पश्चिम एवं पूर्व'** है। इसके अंतर्गत यूरोप के देशों में हुए स्त्री आंदोलनो में फ्रांस, इंग्लैंड एवं अमेरिका की स्त्रियों तथा भारत में हुए स्त्री आंदोलनों में पुनर्जागरण काल से लेकर स्वतंत्रता पश्चात स्त्री समस्याओं को लेकर जो संघर्ष हुए एवं उनके अधिकारों के लिए जितने नियम-कानून बने, उसे देखने की कोशिश की गई है। इसका तृतीय उप-अध्याय **'वर्तमान समय में स्त्री मुक्ति के संघर्ष एवं सपने'** है। वर्तमान समय में स्त्रियों को शिक्षा, रोजगार एवं अन्य क्षेत्रों में अवसर तो मिले हैं लेकिन

वहां भी उनका शोषण हो रहा है, इसे दिखाया गया है। इसके साथ ही साथ वर्तमान समय में जैसे- जैसे स्त्रियों के कार्य क्षेत्र में विस्तार हुआ है वैसे ही उनके शोषण में भी वृद्धि हुई है। इसे देखने की कोशिश की गई है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का तृतीय अध्याय **'अन्नपूर्णा मंडल की आखिरी चिट्ठी में स्त्री जीवन का संघर्ष'** है। इसके अंतर्गत इस कहानी संग्रह की सभी कहानियों के प्रकाशन काल को बताते हुए उनमें छिपे स्त्री शोषण को देखने की कोशिश की गई है। इसका प्रथम उप-अध्याय **'सुधा अरोड़ा की कहानियां: संघर्ष एवं मुद्दे'** है। इसके अंर्तगत सुधा अरोड़ा की कहानियों में व्याप्त स्त्री शोषण को दिखाने के साथ ही साथ वे किस तरह के स्त्री अधिकारों की बात करती हैं, इसे देखने की कोशिश की गई है। इसका द्वितीय उप-अध्याय **'अन्नपूर्णा मंडल की आखिरी चिट्ठी में मध्यवर्गीय स्त्रियों का संघर्ष'** है। इसके अंतर्गत इस संग्रह में मध्यवर्गीय स्त्रियों के जीवन पर आधारित कहानियों में स्त्री जीवन की समस्याओं को दिखाया गया है। इसका तृतीय उप- अध्याय **'अन्नपूर्णा मंडल की आखिरी चिट्ठी में निम्न मध्यवर्गीय स्त्रियों का संघर्ष'** है। इस अध्याय के अंतर्गत निम्न मध्यवर्ग जो मध्यवर्ग और निम्नवर्ग इन दोनों वर्गों की विशेषताएं रखता है। इस वर्ग की स्त्रियों को किन- किन समस्याओं से जूझना पड़ता है, इसे देखने की कोशिश की गई है। इसका चतुर्थ उप- अध्याय **'सुधा अरोड़ा की कहानियों में निम्न वर्गीय स्त्रियों का संघर्ष'** है। इस अध्याय में निम्न वर्गीय स्त्रियां कैसे दोहरे शोषण का शिकार होती हैं एवं श्रमिक वर्ग के लोगों का पूंजीवादी लोग कैसे शोषण करते हैं, इस यथार्थ को देखने की कोशिश की गई है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का चतुर्थ अध्याय **'सुधा अरोड़ा की कहानियां: भाषा एवं शिल्प'** है। इसके अंतर्गत सुधा अरोड़ा की कहानियों में प्रयुक्त भाषा, शिल्प एवं वाक्य विन्यास आदि को समझने का प्रयास किया गया है। इसका प्रथम उप-अध्याय **'सुधा अरोड़ा की कहानियों का शिल्प विधान'**है। इसके अंतर्गत सुधा अरोड़ा की कहानियों की वाक्य संरचना एवं शिल्प को देखने की कोशिश की गई है। इसका द्वितीय उप-अध्याय **'सुधा अरोड़ा की कहानियों की भाषा एवं मुहावरे'** है। इसके अंतर्गत कहानियों में किन- किन भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया गया है। इसे दिखाया गया है। जैसे- जिन कहानियों की पृष्ठभूमि मुंबई है उन कहानियों में प्रयुक्त मराठी एवं मुंबइया हिंदी के शब्दों, वाक्यों को दिखाया गया है और जिन कहानियों की पृष्ठभूमि कोलकाता है उसमें प्रयुक्त बांग्ला मिश्रित हिंदी के शब्दों एवं वाक्यों का प्रयोग किया गया है। कुछ कहानियों में पंजाबी शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। इसके साथ इन कहानियों की पृष्ठभूमि महानगरीय जीवन होने के कारण इनमें प्रयुक्त अंग्रेजी के शब्दों, वाक्यों तथा उर्दू-फारसी के शब्दों को भी

दिखाया गया है। इन कहानियों में प्रयुक्त मुहावरों को भी दिखाया गया है। इसका तृतीय उप-अध्याय **'सुधा अरोड़ा की कहानियों की शैली'** है। इसके अंतर्गत सुधा अरोड़ा की कहानियों के पात्रों द्वारा किस कहानी में कौन-सी शैली प्रयुक्त हुई है, इसे दिखाया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को पूर्ण करवाने में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से गुरुजनों, दोस्तों एवं सीनियरों की महती भूमिका रही है। मैं उनका सदैव आभारी रहूँगी। सर्वप्रथम मैं अपने शोध-निर्देशक आदरणीय डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी सर के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। जिनका सहयोग मेरे लिए अविस्मरणीय है। उन्होंने न केवल मेरे शोध विषय को अपने कुशल निर्देशन, उचित मार्गदर्शन एवं महत्वपूर्ण पुस्तकों के सुझाव से सहज बनाया बल्कि मेरा लगातार उत्साहवर्धन भी किया। जिसके परिणामस्वरूप यह शोध कार्य क्रमबद्ध रूप में सम्पन्न हो सका। मैं आभार व्यक्त करती हूँ साहित्य विद्यापीठ की अधिष्ठाता आदरणीय प्रोफ़ेसर प्रीति सागर मैम के प्रति तथा हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार सिंह सर के प्रति और साथ ही विभाग के समस्त अध्यापकों के प्रति जिन्होंने सदैव अपना सहयोग एवं स्नेह दिया। मैं आभार व्यक्त करती हूँ स्त्री अध्ययन विभाग के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर शंभु गुप्त सर के प्रति जिन्होंने मेरे शोध विषय से संबंधित महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध कराई। इसके साथ ही मैं हिंदी एव तुलनात्मक साहित्य विभाग के समस्त कर्मचारियों के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ। जिनका मेरे प्रति अच्छा व्यवहार व सहयोग रहा।

मैं अपने आदरणीय माता (श्रीमती सुदामा देवी) और पिता (श्री समर बहादुर यादव) एवं परिवार के अन्य सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मुझे इस लायक बनाया। जिसे मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती। मैं अपने बड़े भाई जयसिंह यादव के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने लगातार मेरा उत्साहवर्धन किया। इसके साथ ही मैं अपने मित्रों एवं सहपाठियों के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ। जिन्होंने हर तरह से मेरा सहयोग किया। मैं अपने सीनियर रवीन्द्र कुमार यादव, डॉ. नितिन रामटेके, रामचंद्र, विजयलक्ष्मी सिंह, अनु सुमन बड़ा, प्रियंका शर्मा, आरती कुमारी, रंजीत कुमार निषाद, ज्ञान चंद्र पाल के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने अपने व्यस्ततम समय में भी मेरा सहयोग किया। मैं अपने सहपाठी सत्यवंत यादव एवं छोटी बहन राजनंदिनी निषाद के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने अपने- अपने तरीके से मेरा सहयोग किया। पुस्तकों के बिना यह संसार ही अधूरा है इसलिए मैं महापंडित राहुल सांकृत्यायन केंद्रीय पुस्तकालय, वर्धा एवं विभागीय पुस्तकालय महादेवी वर्मा पुस्तकालय तथा हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के पुस्तकालय 'इंदिरा गांधी मेमोरियल पुस्तकालय' के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। जहां से मुझे अपने शोध विषय से

संबंधित अत्यंत महत्वपूर्ण पुस्तकें उपलब्ध हुईं और जिनका मैंने अपने शोध में उपयोग भी किया है। मैं पुस्तकालय के कर्मचारियों के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ ,जिनका मेरे प्रति अच्छा व्यवहार व सहयोग रहा।

मैंने इस लघु शोध-प्रबंध को मौलिक एवं त्रुटिपूर्ण बनाने का पूरा प्रयास किया है लेकिन फिर भी यदि इसमें कोई त्रुटि रह भी गई हो तो मैं उसके लिए क्षमा प्रार्थी हूँ।

दिनांक : /01/2018 **मनीषा देवी**